E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2022; 4(2): 82-85
Received: 04-02-2022
Accepted: 09-03-2022

मनीला सिंह
शोधार्थी शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. एस.के. त्रिपाठी
सहा. प्राध्यापक शिक्षा, शासकीय शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
मनीला सिंह
शोधार्थी शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

सीधी जिले के विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के अप्रवेशी बच्चों (अशिक्षित) में सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टिकोण का अध्ययन

मनीला सिंह, डॉ. एस.के. त्रिपाठी

सारांश
प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य ''विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के अप्रवेशी बच्चों में सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टिकोण का अध्ययन'' को प्राप्त करने के लिए सीधी जिले के 2 विकासखण्ड में से 50–50 गाँवों इस प्रकार कुल 100 गाँवों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है। प्रत्येक गाँव से 5–5 उत्तरदाताओं अर्थात 250–250 उत्तरदाता प्रत्येक विकासखण्ड से अर्थात कुल 500 उत्तरदाताओं का चयन शोध क्षेत्र के गाँवों से किया गया है। प्राप्त परिणामों से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग की छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक–सांस्कृतिक गतिशीलता में सार्थक अन्तर है। शोध क्षेत्र में अनुसूचित जनजाति वर्ग में सामाजिक–सांस्कृतिक वातावरण एवं शिक्षा में सहसंबंध है।

कुटशब्दः अनुसूचित जनजाति, छात्र–छात्राएँ, प्रवेशित एवं अप्रवेशित, सामाजिक–सांस्कृतिक, दृष्टिकोण

प्रस्तावना
शिक्षा अंधकार से प्रकाश की ओर मानव यात्रा का नाम है। शिक्षा से मनुष्य के अन्तः चक्षु खुल जाते हैं। उसे आत्मिक तथा अलौकिक प्रकाश मिलता है। शिक्षा से सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास होता है। किसी भी राष्ट्र या समाज में जो उन्नति परिलक्षित होती है, वह उस राष्ट्र अथवा समाज की शिक्षा का प्रतिफल है तथा किसी समाज या राष्ट्र को अधोगति में जाना अशिक्षा का द्योतक है। शिक्षा द्वारा इस ज्ञान में वृद्धि होती है, जो पारस्परिक संबंधों के निर्धारण तथा व्यक्ति के विकास में सहायक है। भारत के मध्य में स्थित राज्य मध्यप्रदेश अनेक विविधताओं से परिपूर्ण है, यहां पायी जाने वाली विविधताओं के अनुरूप सामाजिक, सांस्कृतिक विषमताओं का विकास हुआ मिलता है। मध्यप्रदेश के कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जहां सामाजिक और आर्थिक विकास द्रुतगति से हुआ है, किंतु कुछ जिले ऐसे हैं जहां विकास की गतिविधि मंद रही है। इन क्षेत्रों का विकास संतोषजनक नहीं हो सका है। यहां पर निवास करने वाले लोगों की बोली, भाषा, पारिवारिक स्थिति, सामाजिक पद्धति, रीति–रिवाज, सामाजिक एवं धार्मिक विश्वास एवं मान्यताएं, आचार–विचार आदि में प्रचुर विभिन्नताएं पायी जाती है। इन विविधताओं के बीच प्रदेश में निवास करने वाली जनसंख्या के शासन स्तर पर जनगणना विभाग द्वारा सम्पूर्ण देश की आबादी को तीन वर्गों में, जातियों में जैसे–सामान्य वर्ग, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के संवर्ग में वर्गीकृत किया गया है। उक्त तीन संवर्गों में सामान्य वर्ग के लोग सबसे अधिक विकसित, सामाजिक, आर्थिक दृष्टिकोण से सम्पन्न, अनुसूचित जाति संवर्ग के लोग भी सामाजिक, आर्थिक और बौद्धिक दृष्टिकोण से जागरूक पाये गये हैं किंतु अनुसूचित जनजाति समुदाय के कुछ जनजातियों को छोड़कर शेष अधिकांश जनजातियां शैक्षणिक, आर्थिक, सामाजिक आदि विभिन्न क्षेत्रों में अपेक्षाकृत पिछड़ी हुई अवस्था में हैं, प्रदेश की अधिकांश जनजातियां पहाड़ी क्षेत्रों, अनुपजाऊ ऊबड़–खाबड़ भूमियों जो पहुंच में दुरूह, भौतिक धरातलीय संरचना की दृष्टिकोण से मानव के आवागमन के लिए असुविधा और अपनी सांस्कृतिक विरासत को अलग पहचान बनाये हुए हैं। भारत की वर्ष 2011 के जनसंख्या सम्बन्धी आंकड़ों की समीक्षाओं से ज्ञात हुआ है कि अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्या क्षेत्र की कुल जनसंख्या में 8.3 प्रतिशत भाग शामिल हैं, इसी प्रकार मध्यप्रदेश में अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्या 21.10 प्रतिशत पायी जाती है, जबकि अध्ययन क्षेत्र सीधी जिले में कुल जनसंख्या में अनसूचित जनजाति की जनसंख्या का प्रतिशत 30 है। अध्ययन क्षेत्र में अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या का प्रतिशत देश एवं प्रदेश की तुलना में काफी अधिक है। सीधी जिला अनुसूचित जनजाति उपयोजना क्षेत्र अन्तर्गत आता है। यहां पर अनेक प्रकार की अनुसूचित जनजातियां निवास करती हैं। ये लोग सामाजिक–आर्थिक दृष्टिकोण से काफी पिछड़े हुए हैं, इनके पिछड़ेपन का प्रमुख कारण सामाजिक एवं धामिक परम्परा,

अंधविश्वास, शिक्षा की कमी, न्यून साक्षरता दर, आलस्य, धर्म के प्रति अटूट विश्वास, जागरूकता का अभाव आदि प्रमुख रूप से उत्तरदायी है। जिले में विभिन्न प्रकार की जनजातियों का वितरण एवं संकेन्द्रण पाया जाता है, इनके भिन्न–भिन्न गोत्र, परम्परागत व्यवसाय के तौर तरीके, रीति–रिवाज, खान–पान का स्वरूप, वेशभूषा, सामाजिक परम्पराएँ शादी–विवाह की प्रथा, संस्कार, उत्सव त्यौहार आदि सामाजिक एवं सांस्कृति गतिविधियों में काफी असमानताएँ हैं। सीधी जिले में प्रमुख रूप से गोड़, बैगा, अगरिया, खैरवार, पनिका, कोल आदि जनजातियों का वितरण सभी विकास खण्डों में पाया जाता है। जिले की अनुसूचित जनजातियों के समाज का स्वरूप एकाकी परिवार ज्ञातव्य है।

इस प्रकार पश्चिमी सभ्यता के बढ़ते प्रभाव के चलते भारत में बढ़ती औद्योगीकरण, नगरीकरण की प्रवृत्ति के परिणामस्वरूप देश की अनुसूचित जनजातियों में संक्रमण की स्थिति निर्मित हो चुकी है। देश में हो रहे सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया द्रुत गति से अनुसूचित जनजाति पर प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित की है, अधिकांश जनजातियों का अस्तित्व एवं उनकी सभ्यता और संस्कृति विलुप्त होने के कगार पर है, विकास के नाम पर तेजी से हो रहे प्राकृतिक संसाधनों का विदोहन, बढ़ती आबादी, नगरीयकरण में वृद्धि, औद्योगीकरण का विस्तार के चलते जनजातियों के सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक गतिशीलता, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन दृष्टिगोचर है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत देश में अनुसूचित जनजातियों के सामाजिक, आर्थिक विकास के साथ शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास की योजनाएं चलाकर जनजातियों की विकास की मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है।

पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के अप्रवेशी बच्चों में सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टिकोण का अध्ययन पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – कपिल, एच.के. (1996)[1], राय, पारसनाथ (1997)[2], पाठक, पी.डी. (1998)[3], प्रसाद, गोमती (2004)[4], तिवारी, डॉ.(श्रीमती) रंजना (2016)[5], निगम, श्रीमती अमलेन्दु किरन (2016)[6] एवं सिंह, सोना एवं डॉ. जय सिंह (2019)[7].

अध्ययन की आवश्यकता –

देश के विभिन्न भागों में भिन्न–भिन्न जाति, वंश, धर्म, भाषा, परिवार के रूप में लोग निवास करते हैं, उनके भौतिक एवं जैविक परिवेश में भी विविधता पायी जाती है, अनुसूचित जनजातियों की अस्मिता एवं सांस्कृतिक निरन्तरता की समस्या, विकासोन्मुख एवं अर्जनात्मक समाज में अनेक प्रकार से सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन की स्थिति चरम सीमा पर है। शोध क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के अप्रवेशी बच्चों (अशिक्षित) में सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टिकोण का अध्ययन कर यह जानने का प्रयास किया जावेगा, कि अनुसूचित जनजाति वर्ग के बच्चों में सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टिकोण एवं वातावरण पर कितना सकारात्मक या नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. शोध क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के अप्रवेशी बच्चों (अशिक्षित) में सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. अनुसूचित जनजाति वर्ग में सामाजिक–सांस्कृतिक वातावरण एवं शिक्षा में सार्थक सहसंबंध का अध्ययन करना।

परिकल्पना

एच 1. "शोध क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के अप्रवेशी बच्चों (अशिक्षित) में सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"

एच 2. "अनुसूचित जनजाति वर्ग में सामाजिक–सांस्कृतिक वातावरण एवं शिक्षा में सार्थक सहसंबंध है।"

परिसीमाएँ

1. शोध का क्षेत्र सीधी जिले के कुसमी व मझौली विकासखण्ड तक ही लिया गया है।
2. प्रस्तुत अध्ययन अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों तक ही सीमित रहेगा।

न्यादर्श

विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के अप्रवेशी बच्चों में सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टिकोण का अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित सीधी जिले के 2 विकासखण्ड में से 50–50 गाँवों इस प्रकार कुल 100 गाँवों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है। प्रत्येक गाँव से 5–5 उत्तरदाताओं अर्थात 250–250 उत्तरदाता प्रत्येक विकासखण्ड से अर्थात कुल 500 उत्तरदाताओं का चयन शोध क्षेत्र के गाँवों से किया गया है।

उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टिकोण के मापन के लिए डॉ. (श्रीमती) अनूपी समैया एवं डॉ. सुनील बाजपेयी के परीक्षण पत्रक का प्रयोग किया गया।

विधि एवं योजना

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है। सर्वेक्षण विधि वर्णनात्मक अनुसंधान की मुख्य विधियों में से एक है। वर्णनात्मक अनुसंधान में शोध का संबंध वर्तमान से होता है। यह वर्तमान के तत्वों परिस्थितियों के संबंध में व्यक्तियों, वस्तुओं घटनाक्रमों आदि के विशय में प्रपत्र एकत्रित कर उनका विश्लेषण, विवेचन वर्गीकरण तथा मापन आदि का कार्य करता है। सर्वेक्षण अध्ययनों से स्पष्ट तथा निश्चित उद्देश्यों की पूर्ति होती है। इन्हीं विशेषताओं के कारण प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण अनुसंधान का उपयोग किया गया है।

शोध क्षेत्र का परिचय

सीधी जिला म.प्र. की राजधानी भोपाल से उत्तर पूर्वी दिशा में सड़क मार्ग से 635 किलो मीटर दूर है तथा रीवा संभाग के मुख्यालय से दक्षिण पूर्व में 80 किलोमीटर पर जिला मुख्यालय स्थित है। जिला सीधी मूलतः पठारी व पर्वतीय प्रदेश है इसका विस्तार 23°47′ से 24°42′ उत्तरी अक्षांश तथा 81°18′ से 82°49′ पूर्वी देशान्तर के मध्य में स्थित है।

जिला सीधी मध्यप्रदेश के उत्तर पूर्व क्षेत्र में स्थित है। यह प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण है। इसके पूर्व में उत्तर प्रदेश का मिर्जापुर तथा सोनभद्र जिला, दक्षिण में छत्तीसगढ़ राज्य का कोरिया जिला पश्चिम में शहडोल तथा सतना जिला एवं उत्तर में रीवा जिला स्थित है। जिले की समुद्र तल से निम्नतम ऊँचाई 243.84 मी. तथा उच्चतम ऊँचाई 609.60 मी. है। जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल 10526 वर्ग कि.मी. है। यह जिला पूर्व से

पश्चिम 155 कि.मी. तथा उत्तर से दक्षिण 95 कि.मी. फैला हुआ है। क्षेत्रीयता की दृष्टि से यह जिला भारत के कुल भू–भाग का 0.37 प्रतिशत है।

सांख्यिकीय विश्लेषण

प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण एवं परिकल्पना की जांच हेतु मध्यमान, मानक विचलन, टी–टेस्ट, सहसंबंध गुणांक की गणना की गयी है।

परिकल्पना क्रमांक –1: "शोध क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के अप्रवेशी बच्चों (अशिक्षित) में सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"

सारणी 1: शोध क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के अप्रवेशी बच्चों (अशिक्षित) में सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टिकोण का सांख्यिकीय विश्लेषण

क्रमांक	समूह	N	M	SD	सारणी मूल्य		गणनीय ष्जष् मूल्य
					0.01 स्तर	0.05 स्तर	
1.	अध्ययनरत विद्यार्थी समूह	300	17.52	0.12	2.59	1.96	97.24
2.	अप्रवेशी बच्चों का समूह	200	11.88	0.83			

df = 498

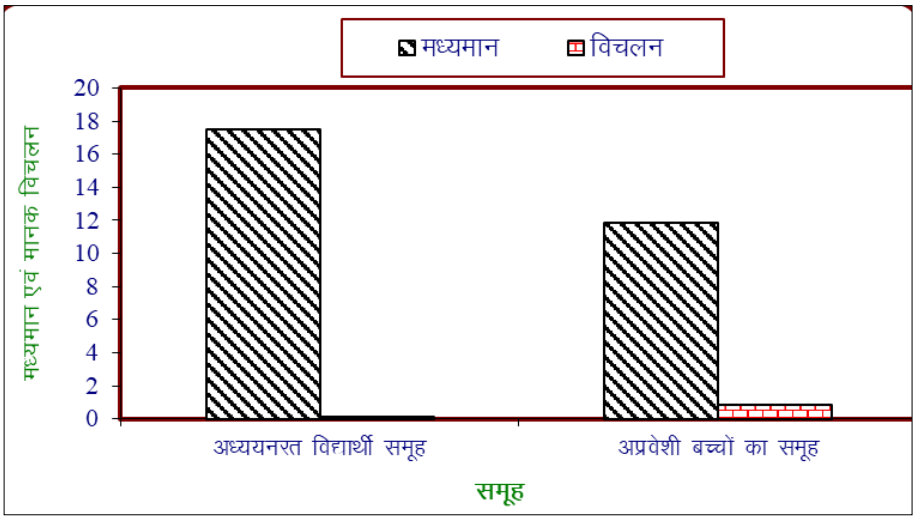

आरेख क्र. 1: शोध क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के अप्रवेशी बच्चों (अशिक्षित) में सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टिकोण का आरेखीय निरूपण

विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी क्रमांक 1 के अवलोकन से ज्ञात होता है, कि विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों एवं विद्यालय में अप्रवेशी बच्चे (अशिक्षित) के प्राप्तांको का मध्यमान क्रमशः 17.52 एवं 11.88 है। तथा प्रमाणिक विचलन क्रमशः 0.12 एवं 0.83 प्राप्त हुआ। इनका कि 498 है। दोनों का ष्जष् का मान 97.24 प्राप्त हुआ है, जोकि 'ज' के सारणी मूल्य 0.01 स्तर एवं 0.05 स्तर पर क्रमशः 2.59 एवं 1. 96 के मानों से अधिक है। इस प्रकार 0.01 एवं 0.05 दोनों स्तरों में सार्थक है। अतः शोध क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों एवं विद्यालय में अप्रवेशी बच्चों (अशिक्षित) के मध्य सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

अतः परिकल्पना निरसित होती है।

परिकल्पना क्रमांक 2: "अनुसूचित जनजाति वर्ग में सामाजिक–सांस्कृतिक वातावरण एवं शिक्षा में सार्थक सहसंबंध है।"

सारणी 2: शोध क्षेत्र में अनुसूचित जनजाति वर्ग में सामाजिक–सांस्कृतिक वातावरण एवं शिक्षा में सहसंबंध का अध्ययन

क्र.	चर	समूह	स्वतंत्रता की कोटि; कण्ण्द्ध	सहसंबंध गुणांक का प्राप्त 'r' मूल्य	सारणी 't' मूल्य	
					0.01 स्तर	0.05 स्तर
1.	सामाजिक–सांस्कृतिक वातावरण	अनुसूचित जनजाति वर्ग	498	0.021	0.115	0.088
2.	शिक्षा					

स्वतंत्रता की कोटि 500–2 = 498

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 से स्पष्ट है कि अनुसूचित जनजाति वर्ग में 'सामाजिक–सांस्कृतिक वातावरण' एवं 'शिक्षा' में सहसंबंध गुणांक का प्राप्त मूल्य 0.021 प्राप्त हुआ है, तथा स्वतंत्रता अंश ;कण्ण्द्ध = 498 के लिए 0.01 एवं 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणी मूल्य क्रमशः 0.115 एवं 0.088 है।

अर्थात गणना से प्राप्त **ष्तष्** मूल्य (0.021), 0.01 एवं 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणी **ष्तष्** मूल्य से कम है। अतः शोध क्षेत्र में अनुसूचित जनजाति वर्ग में सामाजिक–सांस्कृतिक वातावरण एवं शिक्षा में सहसंबंध है।

अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

निष्कर्ष

अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक–सांस्कृतिक गतिशीलता का अध्ययन करने के पश्चात् निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए –

- शोध क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग की छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक–सांस्कृतिक गतिशीलता में सार्थक अन्तर है।
- शोध क्षेत्र में अनुसूचित जनजाति वर्ग में सामाजिक–सांस्कृतिक वातावरण एवं शिक्षा में सहसंबंध है।

संदर्भ

1. कपिल, एच.के. सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1992.
2. राय, पारसनाथ. अनुसंधान परिचय, जैन एण्ड सन्स प्रिन्टर्स, आगरा, 1997.
3. पाठक, पी.डी. भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याएँ, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1998.
4. प्रसाद, गोमती. ''रीवा संभाग की अनुसूचित जाति एवं जनजाति के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति का समीक्षात्मक अध्ययन'' पी–एच.डी. (शिक्षा) अ.प्र.सिंह वि.वि. रीवा (म.प्र.), 2004.
5. तिवारी, डॉ.(श्रीमती) रंजना. "रीवा जिले के गंगेव विकासखण्ड में हाई स्कूल में अध्ययनरत अनुसूचित जाति के बालिकाओं में संचार साधनों के प्रचार–प्रसार द्वारा शिक्षा के प्रति चेतना जागृत का विश्लेषणात्मक अध्ययन" Research Expo International Multidisciplinary Research Journal, 2016; Vol. VI Issue I, Jan. 2016, page 69-77.
6. निगम, श्रीमती अमलेन्दु किरन. "हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत अ.जा. वर्ग की बालिकाओं के शैक्षिक अभिरुचि का समीक्षात्मक अध्ययन" (सतना जिले के विशेष सन्दर्भ में), षोध प्रबन्ध, अवधेष प्रताप सिंह विष्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.), 2016.
7. सिंह, सोना एवं डॉ. जय सिंह. "अनूपपुर जिले में प्रारंभिक शिक्षा स्तर अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के अधिगम स्तर का तुलनात्मक अध्ययन", International Journal of Advanced Research and Development, Volume 4; Issue 2; March 2019; Page No. 63-65.